॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिता-हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्र-साधना

।। पूर्व-पीठिका—श्रीअगस्त्य उवाच ।।

हयग्रीव! दया-सिन्धो!, ललितायाः शुभं मम।
हृदयं च महोत्कृष्टं, कथयस्व महा-मुने!।। १।।

।। श्रीहयग्रीव उवाच ।।

शृणु त्वं शिष्य! वाक्यं मे, हृदयं कथयामि ते।
महा-देव्यास्तथा शक्तेः, प्रीति-सम्पाद-कारकम्।। २।।
बीजात्मकं महा - मन्त्र - रूपकं परमं निजम्।
कामेश्वर्याः स्वाङ्ग - भूतं, डामर्यादिभिरावृतम्।। ३।।
कामाकर्ष्यादि-संयुक्तं, पञ्च - काम - दुघान्वितम्।
नव-वल्लि-समायुक्तं, कादि-हादि- मतान्वितम् ।। ४।।
त्रिकूट - दर्शितं गुप्तं, हृदयोत्तममेव च ।
मूल-प्रकृति-व्यक्तादि-कला - शोधन-कारकम्।। ५।।
विमर्श - रूपकं चैव, विद्या - शक्ति - षडङ्गकम्।
षडध्व-मार्ग-पीठस्थं, सौर-शाक्तादि - संज्ञकम्।। ६।।
अभेद-भेद-नाशं च, सर्व-वाग्-वृत्ति - दायकम्।
तत्त्व-चक्र-मयं तत्त्व-विन्दु - नाद-कलान्वितम्।। ७।।
प्रभा-यन्त्र-समायुक्तं, मूल - चक्र - मयान्वितम्।
कण्ठ-शक्ति-मयोपेतं, भ्रामरी - शक्ति-रूपकम्।। ८।।

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्री ललिता-हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्रस्य श्रीआनन्द-भैरव ऋषिः। अमृत-विराट् छन्दः। श्रीललिता-वाग्देवता-प्रसाद-सिद्धये जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

ॐ श्रीआनन्द-भैरव-ऋषये नमः—शिरसि। ॐ अमृत-विराट्-छन्दसे नमः—मुखे। ॐ श्रीललिता-वाग्देवता-प्रसाद-सिद्धये जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं' मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' अनामिकाभ्यां

नमः। ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' हृदयाय नमः। ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' शिरसे स्वाहा। ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं' शिखायै वषट्। ॐ ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' कवचाय हुम्। ॐ क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ सौः 'स-क-ल-ह्रीं' अस्त्राय फट्।

।। ध्यान।।

द्रां द्रीं क्लीं बीज-रूपे, हसित - कह - कहे, ब्रह्म-देहान्तरङ्गे!
ब्लूं सः क्रों वर्ण-माले, सुर-गण-नमिते, तत्त्व-रूपे! हसखफ्रें ।।
ह्सां ह्सीं ह्सौं बीज-रूपे, परम-सुख-करे, वीर-मातः! स्वयम्भूः ।
ऐं सहखफ्रें बीज-तत्त्वे, कलित-कुल-कले! ते नमः शुद्ध-वीरे ।। १।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथिवी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिता- त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मूल हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्र-पाठ ।।

हृदयाम्बुज - मध्यस्था, ब्रह्मात्मैक्य - प्रदायिनी ।
त्रिपुराम्बा त्रिकोणस्था, पातु मे हृदयं सदा ।। १ ।।
अवर्ण - मालिका शक्तिर्वर्णमाला - स्वरूपिणी ।
नित्याऽनित्या तत्त्वगा सा, निराकार - मयान्विता ।। २ ।।
शब्द - ब्रह्म - मयी शब्द - बोधाकार - स्वरूपिणी ।
सांविदी वादि - संसेव्या, सर्व - श्रुतिभिरीडिता ।। ३ ।।
महा - वाक्योपदेशानी, स्वर - नाडी - गुणान्विता ।
ह्रीं-कार-चक्र - मध्यस्था, ह्रीमुद्यान - विहारिणी ।। ४ ।।
ह्रीं मोक्ष-कारिणी ह्रीं ह्रीं, महा-ह्रीं-कार-धारिणी ।
काल-कण्ठी महा-देवी, कुरु-कुल्ला कुलेश्वरी ।। ५ ।।

ऐं ऐं प्रकाश - रूपेण, ऐं बीजान्तर - वासिनी ।
ईशस्था ईदृशी चेशी, ईं ईं बीज - करी तथा ।। ६ ।।
लक्ष्मी - नारायणान्तःस्था, लक्ष्यालक्ष्य-करी तथा ।
शिवस्था हेति - वर्णस्था, स - शक्तेर्वर्ण - रूपिणी ।। ७ ।।
कमलस्था कला-माला, ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रीं मुखी तथा ।
लावण्य - सुन्दरी पातु, लक्ष्य - कोणाग्रमन्विता ।। ८ ।।
लां लां लीं लीं सुरैः स्तुत्या, सां सीं सूं सैं सुरार्चिता ।
कां कीं कूं काकिनी सेव्या, लां लीं लूं काकिनी-स्तुता ।। ९ ।।
बिन्दु - चक्रेश्वरी पातु, द्वितीया - वर्ण - देवता ।
वसु - कोणेश्वरी देवी, द्वि - दशारेश्वरी च माम् ।। १०।।
मन्वस्त्र - चक्र - मध्यस्था, नाग - पत्रेश्वरी सदा।
षोडशारेश्वरी नित्या, मण्डल - त्रय - देवता ।। ११।।
भू-पुर-त्रय-मध्यस्था, द्वादश - ग्रन्थि - भेदिनी ।
हसां हसीं सु - बीजस्था, हरिद्रादिभिरर्चिता ।। १२ ।।
अनन्त - कोटि - जन्मस्था, जन्माजन्मत्व - वर्जिता ।
अमृताम्भोधि - मध्यस्था, अमृतेशादि - सेविता ।। १३ ।।
मृतामृत - करी मूल - विराट् - शक्तिः परात्मिका ।
आत्मनं पातु मे नित्यं, तथा सर्वाङ्गमेव च ।। १४ ।।
अष्ट - दिक्षु कराली सा, ऊर्ध्वाधः -प्रान्तके तथा ।
गुरु-शक्ति - महा-विद्या, गुरु - मण्डल - गामिनी ।। १५।।
सर्व - चक्रेश्वरी सर्व - ब्रह्मादिभिः सु - वन्दिता ।
सत्त्व-शक्तिः रजः - शक्तिस्तमः-शक्तिः परात्मिका ।। १६।।
प्रपञ्चेशी सु - कालस्था, महा - वेदान्त - गर्भिता ।
कूटस्था कूट - मध्यस्था, कूटाकूट - विवर्जिता ।। १७।।
योगाङ्गी योग-मध्यस्था, अष्ट - योग - प्रदायिनी ।
नव - शक्तिः कृती माता, अष्ट - सिद्धि-स्वरूपिणी ।। १८।।
नव - वीरावली रम्या, मुक्ति - कन्या मुकुन्दगा ।
उपदेश - करी विद्या, महा - मुख्य - विराजिता।। १९।।
मुख्याऽमुख्या महा-मुख्या, मूल - बीज - प्रवर्तिका ।
दिक्-पालकाः सदा पान्तु, श्री श्री-चक्राधि-देवताः ।। २०।।

दिग् - योगिन्यष्टकं पातु, तथा भैरव चाष्टकम् ।
षडङ्ग - देवताः पान्तु, नित्या - षोडशिकास्तथा ।। २१।।
नाथ - शक्तिः सदा पातु, त्रिकोणान्तर - दीपिका ।
त्रि-सारा त्रय - कर्माणि, नाशिनी त्रयं दर्शति ।। २२।।
त्रि - काला शोषणी शोष - कारिणी शोषणेश्वरी ।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदा बाला, भुवनाम्बा वल्गेश्वरी (बुधेश्वरी)।। २३।।
अतृप्तिस्तृप्ति - सन्तुष्टा, तृप्ता तृप्त - करी सदा ।
आम्नाय - शक्तयः पान्तु, आदि-शेष-सु-तल्पिनी ।। २४।।
राज्यत्वं देहि मे नित्यं, आदि-शम्भु-स्वरूपिणी ।
सर्व-रोग-हरा सर्व - कैवल्य - पद - दायिनी ।। २५।।

।। फल-श्रुति ।।

इदं तु हृदयं दिव्यं, ललिता - प्रीति - दायकम् ।
अनेन च समं नास्ति, स्तोत्रं प्रख्यात - वैभवम्।।१।।
शक्ति - रूपं शक्ति - गुप्तं, प्रकटाङ्गे प्रभुं शुभम् ।
मूल - विद्यात्मकं मूल - ब्रह्म - सम्भव - कारणम् ।।२।।
नादादि - शक्ति - संयुक्तमभूतमद्भुतं महत् ।
रोगहं पापहं विघ्न - नाशनं विघ्न - हारिणम्।।३।।
चिरायुष्य - प्रदं सर्व - मृत्यु - दारिद्र्य - नाशनम् ।
क्रोधहं मुक्तिदं मुक्ति - दायकं परं मे सुखम्।।४।।
रुद्रदं मृडपं विष्णुं, दण्डकं ब्रह्म - रूपकम् ।
विचित्रं च सुचित्रं च, सुन्दरं च सु -गोचरम्।।५।।
नाभक्ताय न दुष्टाय, नाविश्वस्ताय देशिकः ।
न दापयेत् परं विद्या - हृदयं मन्त्र - गर्भितम्।।६।।
स्तोत्राणामुत्तमं स्तोत्रं, मन्त्राणामुत्तमं मनुम् ।
बीजानामुत्तमं बीजं, शाक्तानामुत्तमं शिवम्।।७।।
पठेद् भक्त्या त्रि - कालेषु, अर्ध - रात्रे तथैव च ।
वाक्-सिद्धि-दायकं नित्यं, पर-विद्या-विमोहकम्।।८।।
स्व-विद्या-स्थापकं चान्यद्, यन्त्र-तन्त्रादि-भेदनम् ।
कृत्तिका - नक्षत्र-कूर्माख्ये, चक्रे स्थित्वा जपेन्मनुम्।।९।।

।। श्रीमहत्तर-योनि-विद्याया महा-तन्त्रे श्रीललिता-हृदय-स्तोत्रम् ।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

श्रीललिता-हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्र-साधना (हिन्दी-रूपान्तर)

श्रीअगस्त्य जी बोले–हे दया-सागर महा-मुनि **हयग्रीव जी**! मुझे **ललिता** का परम श्रेष्ठ **'हृदय'** बताइए।।१।।

श्रीहयग्रीव जी बोले–हे शिष्य! सुनो, मैं तुम्हें **'हृदय'** सुनाता हूँ, जो शक्ति को प्रसन्नता प्राप्त कराता है।।२।।

यह **बीजात्मक** और **महा-मन्त्र-रूप** स्वयं **कामेश्वरी** का अपना अङ्गभूत है तथा **डामरी** आदि से आवृत है।।३।।

कालाकर्षी, पञ्च-काम-दुघा, नव-वल्ली, कादि-हादि-मत से युक्त है।।४।।

त्रि-कूटों का दर्शक यह गुप्त **'हृदय'** श्रेष्ठ ही है और **मूल-प्रकृति, व्यक्तादि कलाओं का शोधक** है।।५।।

यह **विमर्श-रूप, विद्या** और **शक्ति का षडङ्ग, षडध्व-मार्ग** और **पीठस्थ** तथा **सौर-शाक्तादि का सूचक** है।।६।।

अभेद-भेद का नाशक, वाणी की सभी शक्तियों को देनेवाला, तत्त्व-चक्र-मय और **तत्त्व, बिन्दु, नाद, कला से समन्वित** है।।७।।

प्रकाश-पूर्ण यन्त्र और **मूल-चक्र, कण्ठ-शक्ति से युक्त** यह **भ्रामरी शक्ति-स्वरूप** है।।८।।

विनियोग-उक्त **श्रीललिता-हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्र** के ऋषि **श्रीआनन्द-भैरव**, छन्द **अमृत-विराट्** और विनियोग **श्रीललिता-वाग्-देवता की प्रसन्नता** की प्राप्ति है।

दोनों हाथों से **प्रणाम** करते हुए **कूट-त्रय की दुहरी आवृत्ति** द्वारा **दोनों षडङ्ग** (कर एवं अङ्ग) **न्यास** कर **ध्यान** करना चाहिए। यथा–

हे **वीर-माता**! आप **द्रां-द्रीं-क्लीं** बीज-स्वरूपा, **हसित-कह-कहा, ब्रह्म-देह की अन्तरङ्गा, ब्लूं-सः-क्रों** वर्ण-माला, **देव-गणों द्वारा वन्दिता, तत्त्व-स्वरूपा, ह्स्ख्फ्रें-ह्सां-ह्सीं-ह्सौं**-बीज-स्वरूपा, **परम-सुख-दायिनी, स्वयम्भू, स्ह्स्ख्फ्रें**-बीज-तत्त्वा, **कलित-कुल-कला** और **शुद्ध-वीरा** हैं। आपको नमस्कार है।

उक्त प्रकार **ध्यान** कर **मानस-पञ्चोपचारों** से पूजन कर, **नौ मुद्राएँ** दिखाकर तीन बार **मूल-मन्त्र** का **जप** कर **योनि-मुद्रा** से प्रणाम करना चाहिए और फिर **'हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्र'** का पाठ करना चाहिए। यथा–

।। हृदय-स्तोत्र-माला-मन्त्र ।।

हृदय-कमल के मध्य में विराजमाना, ब्रह्म से आत्मा का ऐक्य करानेवाली, त्रिकोण-स्थिता माता त्रिपुरा सदा मेरे हृदय की रक्षा करें ।।१।।

अवर्ण-माला, शक्ति-वर्ण-माला-स्वरूपा, नित्या और अनित्या, तत्त्व-व्यापिनी वे निराकार-मय हैं ।।२।।

शब्द-ब्रह्म-मयी, शब्द-ज्ञान-स्वरूपा, संविद्-रूपिणी, विद्वद्-सेविता वे सभी श्रुतियों द्वारा वर्णिता हैं ।।३।।

महा-वाक्यों का उपदेश करनेवाली, स्वर-नाड़ी-गुण-स्वरूपा, ह्रीं-कार-चक्र के मध्य में विराजनेवाली वे ह्रीं-रूपी उद्यान में विहार करती हैं ।।४।।

ह्रीं से मोक्ष-दायिनी ह्रीं-ह्रीं महा-ह्रीं को धारण करनेवाली, काल को कण्ठ में रखनेवाली महादेवी वे कुलेश्वरी कुरु-कुल्ला हैं ।।५।।

ऐं-ऐं प्रकाश-रूपिणी, ऐं-बीज के अन्तर में रहनेवाली, ईशस्था, ईदृशी और ईशी ईं-ईं बीज-कारिणी हैं ।।६।।

लक्ष्मी और नारायण के हृदय में रहनेवाली, लक्ष्य और अलक्ष्य का बोध करानेवाली, शिवस्था ह-वर्णस्था और स-शक्ति के वर्णवाली हैं ।।७।।

कमल पर विराजमाना, कला-मालावाली, ह्रां-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-मुखी हैं। लक्ष्य-कोणाग्र से युक्ता लावण्य-सुन्दरी रक्षा करें ।।८।।

लां लां लीं लीं देवों से वन्दिता, सां सीं सूं सैं देवों से पूजिता, कां कीं कूं काकिनी और लां लीं लूं लाकिनी से वन्दिता हैं ।।९।।

द्वितीया वर्ण-देवता विन्दु-चक्रेश्वरी, वसु-कोणेश्वरी और द्वि-दशारेश्वरी देवी मेरी रक्षा करें।।१०।।

मन्वस्र-चक्र के मध्य में रहनेवाली, नाग-दलों की ईश्वरी, षोडशार की ईश्वरी नित्या और तीनों मण्डल के देवता सदा रक्षा करें ।।११।।

तीनों भू-पुरों के मध्य में रहनेवाली, बारह ग्रन्थियों का भेदन करनेवाली, हसां हसीं सुन्दर बीजों में अवस्थिता, हल्दी आदि द्वारा अर्चिता रक्षा करें ।।१२।।

अनन्त कोटि जन्मों में विराजिता, जन्मत्व और अजन्मत्व से विरहिता, अमृत-सागर के मध्य में रहनेवाली, अमृतेशादि से सेविता रक्षा करें ।।१३।।

मृत और अमृत करनेवाली, मूल विराट् शक्ति, परात्मिका मेरी आत्मा और सभी अङ्गों की सदा रक्षा करें ।।१४।।

आठों दिशाओं में वह कराली ऊर्ध्व तथा अधः प्रदेशों में, गुरु-मण्डल में पहुँचनेवाली गुरु-शक्ति महा-विद्या रक्षा करें ।।१५।।

ब्रह्मादि सभी के द्वारा सुचारु रूप से वन्दिता, सत्त्व-रज-तमः शक्ति-रूपा परात्मिका रक्षा करें ।।१६।।

प्रपञ्च की स्वामिनी, सुन्दर काल में विराजमाना, महा-वेदान्त में छिपी हुई, कूटस्था, कूट-मध्यस्था, कूट और अकूट से विरहिता रक्षा करें ।।१७।।

योगाङ्गी, योग-मध्यस्था, अष्ट-योगों का ज्ञान करानेवाली, नव-शक्ति-स्वरूपा, माता, अष्ट-सिद्धियों की रूपवाली रक्षा करें ।।१८।।

नव वीरों से सुशोभिता, मुक्ति-कन्या, मुकुन्द में लीन रहनेवाली, उपदेश-दायिनी विद्या, महान् प्रमुखों में विराजिता रक्षा करें ।।१९।।

मुख्या, अमुख्या और महा-मुख्या, मूल-बीज का प्रवर्तन करनेवाली, दिक्-पालिका, श्रीचक्र की अधि-देवता सदा रक्षा करें ।।२०।।

आठ दिग्-योगिनियाँ और आठ भैरव, षडङ्ग-देवता और सोलह नित्याएँ रक्षा करें ।।२१।।

त्रिकोणान्तर को दीप्त करनेवाली नाथ-शक्ति सदा रक्षा करें। तीनों की सार-रूपा, तीनों कर्मों का क्षय करनेवाली, तीनों को दिखानेवाली रक्षा करें ।।२२।।

तीनों काल व्याप्त रहनेवाली, शोषण की ईश्वरी, भुक्ति-मुक्ति-दायिनी, बाला, भुवनाम्बा और वल्गेश्वरी (बुधेश्वरी) रक्षा करें ।।२३।।

अतृप्ति, तृप्ति, सन्तुष्टा, तृप्ता, तृप्त करनेवाली, आम्नायों की शक्तियाँ, आदि-अन्त-रूपी सुन्दर बिछावनवाली सदा रक्षा करें ।।२४।।

आदि-शम्भु-स्वरूपा मुझे नित्य राज्यैश्वर्य प्रदान करें। सब रोगों को हरनेवाली, सभी मोक्ष-पदों को देनेवाली रक्षा करें ।।२५।।

।। फल-श्रुति ।।

उक्त दिव्य 'हृदय'-ललिता की प्रीति को दिलानेवाला है। इसके समान वैभव-दायक दूसरा स्तोत्र नहीं है।।१।।

शक्ति-स्वरूप, शक्ति को छिपाए हुए यह प्रकट में शुभ-दायक प्रभु-सदृश है। मूल ब्रह्म को प्रकट करने में कारण-भूत मूल-विद्या-स्वरूप है।।२।।

नादादि शक्तियों से युक्त यह बड़ा ही अद्‌भुत है। रोगों, पापों और विघ्नों का नाश करनेवाला है।।३।।

दीर्घ आयु का देनेवाला, सभी प्रकार की मृत्यु और दरिद्रता का नष्ट करनेवाला है। क्रोध का नाशक, मुक्ति देनेवाला यह परम सुख-दायक है।।४।।

रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा के स्वरूपवाला यह विचित्र, सुचित्र, सुन्दर और सुदर्शन है।।५।।

अभक्त, दुष्ट और अविश्वसनीय व्यक्ति को इस मन्त्रात्मक श्रेष्ठ विद्या-हृदय को न देना चाहिए।।६।।

स्तोत्रों में श्रेष्ठ स्तोत्र, मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्र, बीजों में श्रेष्ठ बीज और शाक्तों में श्रेष्ठ शिव-स्वरूप यह है।।७।।

तीनों कालों में और अर्द्ध-रात्रि के समय भक्ति-पूर्वक इसका पाठ करे। यह वाक्-सिद्धि को देनेवाला और सदा शत्रु की विद्या को नष्ट करनेवाला है।।८।।

अपनी विद्या को प्रतिष्ठित करानेवाला और शत्रु के यन्त्र-तन्त्र का भेदन करनेवाला है। कृत्तिका नक्षत्र में कूर्म-चक्र पर बैठकर मन्त्र का जप करना चाहिए।।९।।

वाग्भव-बीज 'ऐं'

हे निखिल शब्दों की जननी-स्वरूपा माता!
अमृत के समान फैलनेवाले, तुम्हारे उस उत्कृष्ट 'वाग्भव-बीज'
'ऐं' को मैं प्रणाम करता हूँ,
'शब्द-पद-वाक्य' और 'चारों प्रमाणों' का जो जनक है,
४ 'वेद', ४ 'उप-वेद', २४ 'स्मृति', ६ 'शास्त्र', १८ 'पुराण',
संस्कृत आदि मनुष्यों में प्रचलित सभी भाषाओं तथा
नाना प्रकार के पशुओं की बोली को जो प्रकट करता है।

—महर्षि दुर्वासा